विचार बिन्दु

सौंदर्य और विलास के आवरण में महत्त्वाकांक्षा उसी प्रकार पोषित होती है जैसे म्यान में तलवार। –रामकुमार वर्मा

महर्षि अग्निवेश के कल्याणकारी प्रश्न

प्रश्न पूछना और उनका उत्तर देना एक गंभीर कला है। इसमें पूर्व से उपलब्ध साहित्य, संहिताओं, वैज्ञानिक ज्ञान, और अनुभवजन्य ज्ञान की समठाता को समेटना पड़ता है। आज से कम से कम 5000 वर्ष पूर्व ऐसे ही कुछ कल्याणकारी प्रश्न आचार्य अग्निवेश ने अपने गुरु भगवान आत्रेय से पूछा था।

दरअसल, आयुर्वेद को पूर्ण विस्तार से समझाने–समझने के बाद आचार्य अग्निवेश को लगा कि आहार, विहार, सद्वृत्त, स्वस्थवृत्त, पंचकर्म, रसायन एवं औषधियों के संदर्भ में भगवान आत्रेय प्रत्येक विषय को सम्हालने के लिये अनेकानेक कारक स्पष्ट किये हैं। तो क्या इन तमाम कारकों में से कुछ ऐसे कारक नहीं हैं जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण हों? आचार्य अग्निवेश अपनी जिज्ञासा नहीं रोक पाये और अंत में गुरुदेव से पूछ ही लिया।

गुरुश्रेष्ठ! आपने आयुविज्ञान को बहुत विस्तारपूर्वक समझाया। जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करने वाले अनेकानेक कारक बताये। परन्तु इन कारकों में कोई तो सबसे महत्वपूर्ण या श्रेष्ठतम होगा? क्या प्राणवर्धन करने वालों में एक, बलवर्धन करने वालों में एक, बृंहण या वृद्धि करने वालों में एक, नंदन या समृद्धि करने वाले कारकों में एक, मन को प्रसन्न करने वालों में एक, और मार्गों में एक सर्वश्रेष्ठ मार्ग है? ––आचार्य अग्निवेश ने पूछा।

आचार्य अग्निवेश के इन प्रश्नों को आप हल्के में नहीं ले सकते। क्यों? बात यह है कि प्राणवर्धन का सबसे महत्वपूर्ण कारक जान लेने से दीर्घायु या लंबी जिंदगी का सबसे महत्वपूर्ण सूत्र तो मिल जायेगा किन्तु ऐसी लम्बी आयु किस काम की है जो बलवान या ऊर्जावान न हो, जो बृंहण या वृद्धि से समुचित भरपूर न हो, जिसमें समृद्धि और प्रसन्नता न हो, और अंततः जिसमें सद्गित या मोक्ष न मिले। इसलिये आचार्य अग्निवेश द्वारा पूछे गये प्रश्नों का यह समुच्चय बेहद रोचक, गूढ़ और कल्याणकारी है। दुर्भाग्यवश, चरकसंहिता के तमाम व्याख्याकार इन प्रश्नों की गहराई, गूढ़ता और निहितार्थ को कभी नाप नहीं पाये। इसलिये आज की चर्चा इन प्रश्नों पर है।

इस प्रश्नों पर भगवान आत्रेय द्वारा दिया गया उत्तर कई कारणों से महत्वपूर्ण हो जाता है।

इनकी चर्चा हम करेंगे, पर पहले उत्तर देखिये।

आयुर्वेद को जानने वाले ऐसा मानते हैं कि प्राणियों के प्राण बढ़ाने वाले कारकों में सबसे श्रेष्ठ अहिंसा, बलवर्धन करने वालों में वीर्य (जोश, बहादुरी या वीर्य) बहादुरी, बृंहण या वृद्धि करने वालों कारकों में विद्या, समृद्धि करने वालों में इंद्रियों पर विजय, मन को प्रसन्न करने वाले कारकों में तत्वज्ञान या सच्चाई का ज्ञान, और मार्गों में ब्रह्मचर्य सबसे उत्कृष्ट है। –आत्रेय का उत्तर था।

आत्रेय के उत्तरों की तीन विशिष्टतायें देखना आवश्यक है। पहली विशेषता यह है कि उत्तर में जिन एक–एक सर्वश्रेष्ठ कारकों को दर्शित किया गया है उनमें एक भी द्रव्य नहीं है बल्कि सभी अद्रव्य कारक हैं। जीवन में केवल द्रव्य ही महत्वपूर्ण नहीं हैं बल्कि अद्रव्य भी उतने ही महत्वपूर्ण हो सकते हैं। उदाहरण के लिये प्राणवर्धक तो आहार भी है किन्तु अहिंसा ही उत्कृष्ट है क्योंकि हिंसा प्राणघातक और अहिंसा प्राणवर्धक होती है। अद्रव्य होने से हम इनका सदैव और अनवरत उपयोग तो कर ही सकते हैं, साथ ही ये बिना किसी अतिरिक्त आर्थिक लागत हमें सदैव उपलब्ध हैं। दूसरी विशेषता यह है कि आत्रेय ने यहाँ उत्तर केवल अपने ज्ञान को आधार मानकर नहीं दिया। यहाँ पर उन्होंने प्रश्नों का उत्तर देने के लिये उस वैज्ञानिक विधि का सहारा लिया है जिसे वर्तमान में एक्सपर्ट–जजमेंट के नाम से जाना जाता है। यही कारण है कि आत्रेय ने अपने उत्तर में इस स्पष्टीकरण का समावेश किया है कि आयुर्वेद को जानने वाले ऐसा मानते हैं। इसका अर्थ यह है कि तत्समय में आयुर्वेद के विद्वानों के मत का निचोड़ आत्रेय ने अग्निवेश को दर्शित किया है। आत्रेय के इन उत्तरों का स्पष्ट अभिप्राय यह भी है कि ऐसा केवल मैं नहीं कह रहा हूं बल्कि मैंने आयुर्वेद के विद्वानों के मध्य उपलब्ध ज्ञान को एक्सपर्ट–जजमेंट के आधार पर प्राप्त कर, आज की भाषा में कहें तो प्रिंसिपल कॉम्पोनेंट एनलिसिस से ज्ञात हुआ सबसे महत्वपूर्ण कारक दर्शित किया है। यहाँ एक महत्वपूर्ण सन्देश यह भी है कि जब प्रश्न का उत्तर व्यापक प्रयोज्यता के लिये हो या अनेक कारकों में से एक प्रधान कारक की खोज पर चिंतन चल रहा हो तो अनेक विद्वानों के विचार को समाहित कर समठा उत्तर देना उपयोगी है।

आचार्य अग्निवेश के प्रश्नों और उनके महान गुरु आत्रेय द्वारा दिये गये उत्तरों के निहितार्थ समझिये। और उसी के अनुरूप अहिंसा, वीर्य, विद्या, इन्द्रियजय, तत्वबोध और ब्रह्मचर्य को सहेजिये। ये अद्रव्य कारक बिना किसी अतिरिक्त धन का निवेश किये आपके पास सदैव उपलब्ध हैं। आजीवन मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ और सुखी रहेंगे।

तीसरी बात यह है चरकसंहिता में यह प्रसंग वस्तुतः हृदयरोगों से बचाव के वर्णन के तुरंत बाद निरंतरता में आया है। इस तथ्य के प्रकाश में देखने पर एक यह सन्देश भी स्पष्ट होता है कि अहिंसा, वीर्य, विद्या, इन्द्रियजय, तत्वबोध और ब्रह्मचर्य जैसे अद्रव्य, किन्तु सभी नागरिकों पूर्णतः क्रियान्वयन–योग्य, भावों की हृदय रोगों से बचाव में भी विशेष भूमिका है। यदि इस दिशा में ध्यान दिया जाये तो भारत को हृदयरोग सहित तमाम गैर–संचारी रोगों की वैश्विक राजधानी होने के कलंक से मुक्ति मिल सकती है।

इस चर्चा का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? वस्तुतः इस बात को समझने के लिये उत्तरों के निहितार्थ समझना आवश्यक है। सबसे पहला सन्देश तो यह है कि केवल लंबी आयु किसी काम की नहीं है। बीमार शरीर में लम्बे समय तक प्राण तो अटके रह सकते हैं परन्तु ऐसी आयु सुखायु और हितायु की श्रेणी में नहीं गिनी जाती। आयु ऐसी हो जिसमें मानसिक और शारीरिक बल और वृद्धि हो, समृद्धि हो, आनंद हो और जो इन्द्रिय–संयम के मार्ग पर चले। इन प्रश्नों और उत्तरों में इस महत्वपूर्ण समुच्चय का पूरा पूरा ख्याल रखा गया है।

अहिंसा प्राणवर्धक कारकों में श्रेष्ठतम कैसे है? दरअसल, हिंसा के सभी प्रकार, डांट–डपट, चिल्लाना, मारपीट करना, प्रताड़ित करना आदि जीवित कोशिकाओं में ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इन्फ्लेमेशन को बढ़ा देते हैं। ऐसी दशा में बुढ़ापा जल्दी आता है और समय–पूर्व मृत्यु की संभावना बढ़ती है। स्वाभाविक है कि अहिंसा प्राणवर्धन में सबसे श्रेष्ठ है।

इसी प्रकार बल को बढ़ाने वाले कारकों में वीर्य सबसे बेहतर है। वीर्य या जोश आत्मविश्वास को बढ़ाता है। व्यक्ति को बलशाली बनाने में जोश का अद्वितीय योगदान रहता है। इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है जब सेना–नायकों ने अपनी फौज में जोश दिलाकर हारे हुये युद्ध जीते हैं।

बृंहण या वृद्धि करने वाले कारकों में विद्या को सबसे उत्तम माना गया है। विद्या केवल मन और शरीर का बृंहण नहीं करती, बल्कि जीवन की समठाता का बृंहण होता है। वस्तुतः शारीरिक और मानसिक विकास में विद्या, जिसमें ज्ञान और कौशल शामिल हैं, का बड़ा योगदान है।

जानकारी, ज्ञान कौशल के बिना शरीर का पोषण या वृद्धि नहीं हो सकती। विद्या–विहीन व्यक्ति आहार, विहार, सद्वृत्त, स्वस्थवृत्त, पंचकर्म, रसायन और औषधियों के महत्त्व को कभी नहीं समझ सकता। और इन सबकी समझ और क्रियान्वयन के बिना समुचित मानसिक और शारीरिक पोषण, विकास या वृद्धि नहीं होती।

समृद्धि देने वाले कारकों में इंद्रियों पर विजय सबसे महत्वपूर्ण है। वास्तव में आंख, नाक, कान, जीभ व चमड़ी मन के नियंत्रण हों तो रोग नहीं होते। आरोग्य या रोगरहित हुये बिना समृद्धि नहीं प्राप्त हो सकती। असल में आरोग्य के बिना अर्थ, धर्म, काम या मोक्ष कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। जीवन में खुशी चाहिये तो याद रखिये कि आरोग्य ही सुख है और विकार ही दुःख है।

इसीलिये समृद्धि में इन्द्रिय–जय का अद्वितीय योगदान है।

प्रसन्नता देने वाले कारकों में तत्वबोध या सच्चाई का ज्ञान सबसे महत्वपूर्ण कारक है। यथार्थ ज्ञान के बिना व्यक्ति निरुद्देश्य भटकता रहता है। ऐसे व्यक्ति जीवन के महत्वपूर्ण लक्ष्यों को भी नहीं साध पाते। तत्वबोध मन को प्रसन्न करने वाले कारकों में इसीलिये सर्वश्रेष्ठ कहा गया है।

अंततः, मार्गों में ब्रह्मचर्य सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। ब्रह्मचर्य का मूल दर्शन वस्तुतः मैथुन के पूर्ण प्रतिबन्ध पर नहीं बल्कि इन्द्रिय–संयम और आत्म–नियंत्रण पर केन्द्रित है। आयुर्वेद का मत है कि मैथुन की अधिकता से अनेक रोग होते हैं किन्तु यदि सेक्स की इच्छा को दबाया जाता है या शुक्र–वेग धारण किया जाता है तो स्वास्थ्य–विषयक अनेक समस्यायें जैसे जननेंद्रिय, टेस्टिकल्स, शरीर और हृदय में दर्द, और मूत्र–विसर्जन में रुकावट और दर्द के लक्षण खड़े हो जाते हैं। मैथुन न करने से प्रमेह, मोटापा, तथा शारीरिक शिथिलता होती है। आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों में भी इन तथ्यों की पुष्टि होती है। इन समस्याओं से बचने के लिये पति–पत्नी के मध्य प्रगाढ़ शारीरिक रिश्ते क्लिनिकल दृष्टि से उचित और स्वास्थ्य के लिये हितकर हैं।

चरकसंहिता में वाजीकर द्रव्यों और अद्रव्यों के माध्यम से चिकित्सा का विस्तृत वर्णन यह स्पष्ट रूप से सिद्ध करता है कि गृहस्थों के लिये सेक्स पूर्ण–त्याज्य कभी नहीं रहा। पर इस बात को ध्यान रखें कि इन्द्रियों के संयम के बिना मानव का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय अस्तित्व सदैव संकट में ही रहता है।

ध्यान दीजिये आचार्य अग्निवेश के प्रश्न और आत्रेय के उत्तर वस्तुतः जीवन की समठाता और उसे सम्हालने वाले श्रेष्ठ कारकों को समेटे हुये हैं। यहाँ केवल प्राणवर्धन या दीर्घायु मात्र का सूत्र जानने की जिज्ञासा नहीं है बल्कि ऐसे सूत्र जानने की जिज्ञासा है जिसमें दीर्घायु, हितायु और सुखायु अपनी समठाता में हो। ऐसी लम्बी उम्र किस काम की होगी जिसमें शरीर में बल न रहे।

इसीलिये दूसरा प्रश्न बलवर्धन पर केन्द्रित है। इसी प्रकार, लम्बी आयु और बल के साथ–साथ वृद्धि, समृद्धि और हर्ष और अंततोगत्वा सर्वाधिक महत्वपूर्ण मार्ग को समझने का प्रयास किया गया है।

हितकारी और सुखकारी जीवन ही जीने योग्य जीवन है। आचार्य अग्निवेश के प्रश्नों और उनके महान गुरु आत्रेय द्वारा दिये गये उत्तरों के निहितार्थ समझिये। और उसी के अनुरूप अहिंसा, वीर्य, विद्या, इन्द्रियजय, तत्वबोध और ब्रह्मचर्य को सहेजिये। ये अद्रव्य कारक बिना किसी अतिरिक्त धन का निवेश किये आपके पास सदैव उपलब्ध हैं। आजीवन मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ और सुखी रहेंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

(5 जून – विश्व पर्यावरण दिवस विशेष)

पर्यावरण संतुलन हेतु पर्यावरण प्रबंधन एवं संरक्षण की महती आवश्यकता

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने विश्व में पर्यावरण संतुलन, संरक्षण एवं सुरक्षा तथा पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर राजनीतिक एवं सामाजिक जागृति लाने के लिए 5 जून 1972 को विश्व पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया। इसमें विश्व पर्यावरण दिवस मनाए जाने का निर्णय लिया। इसके दो साल बाद 5 जून 1974 से विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाने लगा।

सन् 1987 में इसके केन्द्र को बदलते रहने का सुझाव सामने आया और उसके बाद से ही इसके आयोजन के लिए अलग–अलग देशों को चुना जाता है। इसमें प्रतिवर्ष 143 से अधिक देश भाग लेते हैं और इसमें कई सरकारी, सामाजिक और व्यावसायिक लोग पर्यावरण की सुरक्षा, समस्या आदि विषय पर चर्चा करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा संचालित विश्व पर्यावरण दिवस दुनिया का सबसे बड़ा वार्षिक आयोजन है। इसका मुख्य उद्देश्य हमारी प्रकृति की रक्षा के लिए जागरुकता बढ़ाना और दिन–प्रतिदिन बढ़ रहे विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों पर चर्चा करके हल निकालना है।

पन्नालाल मेघवाल

मानव जीवन और पर्यावरण एक–दूसरे पर निर्भर हैं। मानव की बुरी आदतें जैसे वृक्षों की अत्यधिक मात्रा में कटाई करना, पानी दूषित करना, बर्बाद करना आदि पर्यावरण को बुरी तरह से प्रभावित करती हैं। मानव की अच्छी आदतें जैसे वृक्षों को सहेजना, जलवायु प्रदूषण रोकना, स्वच्छता रखना पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पर्यावरण के जैविक संघटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर कीड़े–मकोड़े, सभी जीव–जंतु और पेड़–पौधों के अलावा उनसे जुड़ी सारी जैव क्रियाएं और प्रक्रियाएं भी शामिल हैं। जबकि पर्यावरण के अजैविक संघटकों में निर्जीव तत्व और उनसे जुड़ी प्रक्रियाएं आती हैं, जैसे: पर्वत, चट्टानें, नदी, हवा और जलवायु के तत्व इत्यादि।

- **पर्यावरण सम्मेलन में प्रतिवर्ष 143 से अधिक देश भाग लेते हैं**

यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी पर निर्भर करती और संपादित होती है। मनुष्यों द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियाएं पर्यावरण को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं।

मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो भागों में बांटा जा सकता है, जिसमें पहला है प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण। यह विभाजन प्राकृतिक प्रक्रियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और न्यूनता के अनुसार है।

पर्यावरणीय समस्याएं जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन इत्यादि मनुष्य को अपनी जीवनशैली के बारे में पुनर्विचार के लिये प्रेरित कर रही हैं और अब पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता महत्वपूर्ण है। पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए यह भी आवश्यक है कि सरकारी, गैर सरकारी, निजी संस्थानों एवं पर्यावरण प्रेमियों के माध्यम से आम जनता को जागरूक किया जाए।

पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

रामगंजमंडी के व्यवसायी का कोटा में नेत्रदान–देहदान संपन्न

कोटा, (निसं)। बहुमुखी प्रतिभा के धनी व समाजसेवी राजकुमार पहाड़िया (71 वर्ष) सुविधा नगर, रामगंजमंडी के निवासी रहे हैं। अधिक उम्र होने के बाद भी साधु संतों की सेवा, प्रतिदिन मंदिर जाना और सत्संग के कार्यक्रमों में जाना उन्होंने कभी नहीं छोड़ा।

थोड़े समय से अस्वस्थ रहने के कारण वह रामगंजमंडी से अपने छोटे बेटे दिलीप के पास में कोटा में आ गये थे, अभी कुछ दिनों पहले ही उन्होंने अपनी पत्नी कुसुम और बेटे भागचंद व दिलीप के सामने अपनी देह को दान करने का संकल्प पत्र भरने की बात रखी। बच्चों के साथ पोतों ने भी तुरंत ही अपने दादाजी की इच्छा को जानते हुए, उनका देहदान संकल्प पत्र भरवा दिया था, इसी बीच अस्वस्थता के कारण शुक्रवार को देर रात उनका कोटा में निधन हो गया। अचानक हुई इस घटना के कारण परिवार के सभी लोग शोक में आ गये। थोड़ी देर बाद जब करीबी रिश्तेदार पहुंचे, तब नेत्रदान व देहदान के विषय पर चर्चा हुयी, इसके उपरांत नेत्रदान हेतु तुरंत ही शाइन इंडिया फाउंडेशन के डॉ कुलवंत गौड को संपर्क किया गया, देर रात 11 बज़े डॉ गौड़, ईबीएसआर, कोटा चेप्टर के टेक्नीशियन के साथ मौके पर पहुंचे और नेत्रदान की प्रक्रिया को संपन्न कराया। देहदान की कार्य हेतु परिवार के सदस्यों ने मेडिकल कॉलेज के विभागाध्यक्ष से बात करके पिताजी के पार्थिव शव को एमबीएस अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया, फिर सुबह 10 बजे मेडिकल कॉलेज कोटा को सौंपा गया। रामगंजमंडी निवासी, राजकुमार के पारिवारिक सदस्य मनोज चांदवाड का कहना है कि, राजकुमार जी सिर्फ नाम से ही राजकुमार नहीं थे, दुनिया से जाने के बाद भी उनके नेत्रदान और देहदान जैसे सदकार्यों से वह सदा राजकुमार की तरह ही जाने जा सकेंगे। इसी क्रम में शाइन इंडिया फाउंडेशन द्वारा परिवार के सभी सदस्यों के बीच दोनों बेटों भागचंद, दिलीप, बेटी कविता जैन, भतीजे संजय पांडे जी और बच्चों को नेत्रदान–देहदान के कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। संस्था शाइन इंडिया फाउंडेशन, रामगंजमंडी शाखा के ज्योति–मित्र संजय विजावत ने बताया कि, 6 वर्ष पूर्व बाजार नंबर एक निवासी श्रीमति कंचन जैन का भी देवलोक गमन के उपरांत उनके पति गुलाब चंद जी और बच्चों ने इंदौर में उनका देहदान संपन्न कराया था। इस तरह से यह रामगंजमंडी क्षेत्र से दूसरा देहदान है।

रामगंजमंडी निवासी राजकुमार पहाड़िया के देहदान के समय परिजन उपस्थित रहे।

सरकारी पशु चिकित्सालय में कार्यरत एलएसए का पूरा परिवार लगा है पशु पक्षियों की सेवा में

नारायणपुर, (निसं)। पशु चिकित्सालय में एलएसए पद पर कार्यरत गोविन्द भारद्वाज और उनका परिवार पर्यावरण व पशु पक्षियों की सेवा में लगे है अब लोग उनका उदाहरण देने लगे हैं। पावटा के पास गांव भाकरी में रहने वाले गोविंद भारद्वाज और उनका परिवार अब तक करीब 23 हजार गाय, मोर, बंदर, नीलगाय जैसे घायल पक्षियों का इलाज कर उन्हें ठीक कर चुके हैं। इसके अलावा 129 नवजात पशु पक्षियों को अपने हाथों से दूध पिला कर पालन पोषण कर चुके हैं जिनकी मां की जन्म के दौरान मृत्यु हो गई। गोविंद कहते है कि भगवान ने मनुष्य और पशु पक्षियों को एक दूसरे के लिए बनाया है।

- **अबतक 23 हजार बेजुबान पशु पक्षियों का इलाज कर जान बचाई**
- **129 बिन मां के बच्चों को अपने हाथों से दूध पिलाकर पाला**

पशु पक्षी प्रेमी एलएसए गोविंद भारद्वाज और उनका परिवार हिरण के बच्चे को दूध पिलाते हुए।

वन्य जीवों से ही हमारा पर्यावरण रोज सुबह से शाम तक गुजांयमान रहता है। गोविन्द कोटपुतली, पावटा, शाहपुरा, विराटनगर, थानागाजी, नारायणपुर, बानसूर आदि तहसीलों में दिन–रात सेवा में लगे रहते हैं। बीमार घायल पशु पक्षी की सूचना मिलने पर वो ना रात देखते हैं ना दिन बस यही प्रयास करते हैं कि जल्द से जल्द पहुंचे। भारद्वाज ने अब तक 19393 गाय, 1567 नील गाय, 1460 मोर, 1 जरख, 105 बन्दर, 36 लंगूर, 2 गीदड, 2 लोमडी और 500 से अधिक छोटे परिन्दो का उपचार कर उनके जीवन को बचा चुके है। इस पुनीत कार्य में बडे भाई डॉ.गौरीशंकर शर्मा छात्र मोहित शर्मा एवं दिव्या शर्मा जीवो को बचाने में पूरा सहयोग देते हैं। गोविंद भारद्वाज बताते हैं कि बचपन में ही उनकी माता जी का देहांत होने पर मां की सेवा करने का सौभाग्य नहीं मिल सका इसलिए वह गौ माता को और बेजुबान पशु पक्षियों की सेवा को मां की सेवा मानकर कर रहे हैं।

दो साल बाद फिर शुरू हुई हज यात्रा

झुंझुनूं से जाने वाले हज यात्रियों का स्वागत किया व टीके लगाए।

झुंझुनूं। दो साल बाद इस बार फिर से हज यात्रा शुरू हुई है। कोरोना के चलते दो साल तक हज यात्रा नहीं हो पाई थी। इस बार राजस्थान से 2300 के करीब मुस्लिम महिलाएं और पुरुष हज के मुकद्दस सफर के लिए 12, 13 व 14 जून को दिल्ली से रवाना होंगे। झुंझुनूं से जाने वाले हज यात्रियों को शनिवार को प्रशिक्षण दिया गया व टीके लगाए गए। इस मौके पर राज्य हज कमेटी के सदस्य रियाज फारूकी मौजूद रहे। झुंझुनूं के हजरत कमरुद्दीन शाह दरगाह में हज पर जाने वाले यात्रियों का टीकाकरण किया गया तथा हज के बारे में बरती जाने वाली संपूर्ण सावधानियां तथा अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां दी गई। इस मौके पर दरगाह के गद्दीनशीन एजाज नबी तथा पूर्व सभापति खालिद हुसैन भी मौजूद रहे। राज्य हज कमेटी के सदस्य रियाज़ फारुकी ने बताया कि झुंझुनूं जिले से 36 जायरीन हज के जाएंगे। जिनमें 16 पुरुष तथा बीस महिलाएं शामिल है। जिन्हें 72 घंटे पहले तुर्कमान गेट दिल्ली पहुंचना होगा। वहीं पर इनका आरटीपीसीआर होगा। झुंझुनूं के यात्री 13 जून को दिल्ली से रवाना होंगे। फारुकी ने बताया कि राजस्थान से जाने वालों का 12, 13 व 14 जून को फ्लाइट है। जिनमें झुंझुनूं के यात्री 13 जून को मुकद्दस सफर पर रवाना होंगे। इसी तरह पूरे प्रदेश में टीकाकरण व प्रशिक्षण के कार्यक्रम जारी है। जिनमें झुंझुनूं में आज संपन्न हुआ। सीकर में 5 जून को तथा चुरू में 6 जून को आयोजित होगा। इस अवसर पर दरगाह के सज्जादा नशीन एजाज नबी की अध्यक्षता तथा पूर्व सभापति खालिद हुसैन के आतिथ्य में अब्दुल रशीद खोकर, मोहम्मद आफसीन, सज्जाद हैदर ने प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर इनका शानदार स्वागत भी किया गया। इस अवसर पर हज कमेटी की तरफ से हज पर जाने वाले यात्रियों को बैगेज भी वितरित किए गए।

राशिफल रविवार 5 जून, 2022

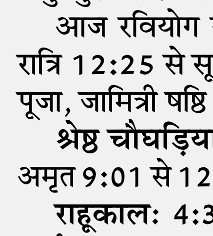

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2079, आश्लेषा नक्षत्र रात्रि 12:25 तक, व्याघात योग रात्रि 4:48 तक, कौलव करण सांय 5:46 तक, चन्द्रमा रात्रि 12:25 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–वृष, चन्द्रमा–कर्क, मंगल–मीन, बुध–वृष, गुरू–मीन, शुक्र–मेष, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज रवियोग रात्रि 12:55 तक है। यमघट योग रात्रि 12:25 से सूर्योदय तक है। आज विन्धय वासिनी पूजा, जामित्री षष्ठि है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:19 से 9:01 तक, लाभ–अमृत 9:01 से 12:25 तक, शुभ 2:07 से 3:49 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:14

मेष
घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नये–पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित धन प्राप्त होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यक्तिगत कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

कर्क
आज शुभ–मांगलिक कार्य में भाग लेने का अवसर मिलेगा। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

सिंह
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और वाद–विवाद बढ़ने का भय बना रहेगा।

कन्या
अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला
महत्वपूर्ण और अति आवश्यक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परिवार में वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा।

मकर
परिवार में प्रसन्नता–हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कुंभ
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिनचर्या में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

मीन
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच–विचार हो सकता है।